डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव 2018 का तीसरा दिन

आमने सामने कार्यक्रम में बाङ्ला, अंग्रेज़ी, हिंदी, मलयाळम् एवं तेलुगु के लिए पुरस्कृत लेखकों से प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत

नई दिल्ली, 14 फ़रवरी 2018 । 'आमने सामने' कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2017 विजेताओं से कुछ चुने हुए साहित्यकारों ने बातचीत की। प्रो. संदीप चटर्जी ने बाङ्ला भाषा में पुरस्कृत लेखक प्रो. आफसार आमेद का साक्षात्कार किया। प्रो. आफसार आमेद ने कहा कि वे अपने समुदाय और बहुबली क्षेत्र के बारे में लिखते हैं। उन्होंने कहा कि 'क़िस्सा' शृंखला में उन्होंने कोशिश की है कि वे नई सृजनात्मक शैली का इजात कर सके, जिसमें वे अपने भोगे हुए जीवन को व्यक्त कर सके। क़िस्सा छह उपन्यासों की शृंखला है, उन्होंने बताया। उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा लगता है कि वे अखिल ब्रह्माण्ड के नागरिक हैं और उन्होंने मानवता के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि नारी स्त्री वादी लेखक नहीं है, बावजूद इसके उन्होंने स्त्री के भीतर के संसार को जानने की कोशिश की है।

अंग्रेज़ी भाषा में पुरस्कृत सुश्री ममंग दई के साथ डॉ. निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने संवाद किया। डॉ. निर्मलकांत भट्टाचार्जी ने पूछा कि उनके लेखन को क्या राजनीति का उनके लेखन पर प्रभाव है ? वे पत्रकारीय गद्य से रचनात्मक गद्य की ओर क्यों आईं या इसकी आवश्यकता क्यों महसूस हुई ? डॉ. निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने ममंग दई के पुरस्कृत उपन्यास 'द ब्लैक हिल' और उन्नीसवीं शताब्दी के मुद्दों के संदर्भ में भी बातचीत की। उन्होंने यह भी पूछा कि वो कौन से दबाव और आवेग थे, जिन्होंने यह उपन्यास लिखने के लिए उन्हें प्रेरित किया। उन्होंने सुश्री ममंग दई से उनके पहले उपन्यास और लोककथाओं तथा लोक गीतों पर आधारित उनके दो संग्रहों के बारे में भी पूछा कि उन्हें ऐसी सामग्री कहाँ से प्राप्त हुई ? उनके गद्य और पद्य लेखन में आदिवासी जीवन के विभिन्न तत्त्वों के प्रभाव के बारे में उन्होंने प्रश्न किए, जिनके समुचित उत्तर सुश्री ममंग दई ने दिए।

... 2/–

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

हिंदी भाषा में पुरस्कृत प्रो. रमेश कुंतल मेघ से श्री प्रयाग शुक्ल ने बातचीत की। प्रो. रमेश कुंतल मेघ ने बताया कि बचपन से ही चित्रकला और साहित्य के प्रति उनमें एक जुनून–सा था। वास्तव में वे एक पैदाइशी चित्रकार हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें ऐसा लगता है कि सिर्फ़ माइकेल एंजेलो एक ऐसे चित्रकार हैं, जिन्होंने सुडौल देह चित्रित की है, शेष चित्रकारों ने सुकुमार देहों को चित्रित किया है। उन्होंने ऐसा पाया है कि 'देखने' की कला से अंजान और दूर हैं। यह 'दर्शन' (देखना) पाकर ही हम समझ सकते हैं कि 'मोनालिसा' चित्र के भीतर दर्ज तनाव भौतिक है और यही मोनालिसा, चित्र में अपेक्षा भी करती है। उन्होंने स्वीकार किया कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन की साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पुस्तक 'मध्य एशिया का इतिहास' ने उन्हें गहरे तक प्रभावित किया है। यह पुस्तक राहुल जी के एकाग्र अनथक ध्यान का सुफल है।

आधुनिक युग के बाद सृजनात्मक लेखन में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए चर्चित मलयाळम् लेखक श्री के.पी. रामनुन्नी से डॉ. ए.जे. थॉमस ने संवाद स्थापित किया। उन्होंने उनके बहुचर्चित उपन्यास 'चरम वार्षिकम' (बरसी) के बारे में बातचीत की। श्री के.पी. रामनुन्नी ने अपने लेखन के माध्यम से हिंदू और मुस्लिम के बीच पारस्परिक सांप्रदायिक सौहार्द क़ायम करने की महत्त्वपूर्ण कोशिश की है, जिसकी वजह से उनका मलयाळम् साहित्य में विशेष स्थान है। उनकी बहुप्रशंसित पुस्तक को 'दैवातिनिटि पुरस्कार' मिलना उनके मिशन का एक उच्चतम सोपान है। श्री रामनुन्नी ने कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उनके उपन्यास का लेखन स्वयं उनके लिए भी एक चुनौती था क्योंकि इसमें समय और स्थान को उन्होंने जिस तरह से व्यक्त किया है, यह उनके लिए एक महत्त्वकांक्षी योजना की तरह हो गया था और इसीलिए उनके लिए एक अभिनव समस्या बन गया था। इस उपन्यास में द्वापर युग से मौजूदा समय तक का विस्तार है।

तेलुगु भाषा में पुरस्कृत लेखक श्री टी. देवीप्रिया से श्री कृष्णा राव ने बातचीत की। श्री टी. देवीप्रिया ने बताया कि उन्होंने काव्य संवेदना अपनी माँ से पाई। उन्होंने कहा कि उनके पास कविता इस तरह आती है जैसे पौधे में फूल आता है। उन्होंने यह भी कहा कि सृजनात्मक लेखन के प्रति उनके भीतर एक जुनून है और वे 'स्क्रीन' के लिए कभी लिखना नहीं चाहते। उन्होंने स्वीकार किया कि तेलुगु के प्रख्यात लेखक ए. सुब्बाराव ने उन्हें जीवन में मज़बूती से खड़े होने में बड़ी सहायता की है।

4/12/2012

(के. श्रीनिवासराव)